P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-I*September-2015

अश्विनी कुमारों का स्वरूप एवं लोकोपकारी कार्य

वीरेन्द्र कुमार मौर्य
सहायक प्राध्यापक,
संस्कृत विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
आलापुर, अम्बेडकर नगर, उ0प्र0

सारांश

ऋग्वेद में स्तुत सूक्तों के अनुसार इन्द्र, अग्नि एवं सोम के बाद युगल देव अश्विनी कुमार ही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं। लगभग पचास सूक्तों में उनको स्वतन्त्र रूप से प्रख्याति है। वैदिक देवताओं में ये सर्वाधिक कम उम के देव हैं। ये तेजस्विता के अधिपति, स्वर्ण कान्ति वाले, उत्क्रोश पक्षी की भाँति द्रुतगामी, बलिष्ठ, मेधावी, एवं गुह्यशक्ति से युक्त हैं। मधुप्रेमी के साथ ही साथ ये अन्य देवताओं की भाँति सोमप्रेमी भी हैं। अश्विनी कुमारों के सुवर्णमय रथ को ऋभुओं ने बनाया था। यह रथ त्रिस्तरीय है अर्थात् यह तीन खण्डों वाला, तीन पहियों वाला एवं तीन स्तम्भों वाला है। इस रथ को कभी हंस, कभी उत्क्रोश पक्षी, कभी भैंस तो कभी गधे खींचते हैं। यह रथ एक ही दिन में आकाश एवं पृथ्वो की परिक्रमा कर लेता है। अश्विनी कुमारों का निवासस्थान समुद्र, आकाश के जलपलावन, वृक्ष, गृह, एवं पर्वत शिखरों पर है। इनका दिन में तीन बार अर्थात् प्रातः, मध्याह्न एवं सायं तीनों ही समय आवाहन किया जाता है।

अश्विनी कुमार अन्य देवों की अपेक्षा सर्वाधिक शीघ्रतापूर्वक सहायता करने वाले तथा सामान्य रूप से सभी विपत्तियों से मुक्त करने वाले देव माने गये हैं। विपत्तियों से लोगों की सहायता करने के साथ ही साथ ये लोग दिव्य चिकित्सक भी हैं जो अपने उपचारों से व्याधियों का उपशमन, दृष्टिदान, अन्धे, अपंग तथा रुग्ण व्यक्तियों को स्वास्थ्य प्रदान करते हैं। ये अपने स्तोताओं को वृद्धावस्था तक दृष्टिहीन नहीं होने देते और उन्हें प्रचुर धन–सम्पत्ति तथा सन्तानों से परिपूर्ण रखते हैं। ये समुद्र में जहाजों को डूबने से बचाते हैं। वृद्ध च्यवन ऋषि को यौवन प्रदान करना, मरुप्रदेश में फँसे एवं प्यास से तड़पते हुए गौतम ऋषि को जलपान कराना, नन्दन ऋषि को कूप से बाहर निकालना, जराजीर्ण वन्दन ऋषि को यौवन प्रदान करना, मृत श्याव ऋषि को जीवन प्रदान करना, ऋज्राश्व ऋषि को दृष्टि प्रदान करना, विश्पला को लाहे का पैर प्रदान करना आदि अश्विनी कुमारों के महत्त्वपूर्ण कार्य हैं।

कुल मिलाकर अश्विनी कुमार लोककल्याणकारी एवं वैदिक चिकित्सक हैं और इनकी सामाजिक प्रतिष्ठा इन्द्र से बढ़कर है।

मुख्य शब्द : लोकोपकारी कार्य, तेजस्विता के अधिपति, विपत्तियां, उपशमान।

प्रस्तावना

ऋग्वेद में स्तुत सूक्तों के अनुसार इन्द्र, अग्नि एवं सोम के बाद युग्मज देव अश्विन् द्वय ही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं। स्वतन्त्र रूप से पचास सूक्तों एवं कुछ अन्य सूक्तों में इनकी प्रख्याति है। ये दोनों देव यमज एवम् अवियोज्य हैं। ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के उन्तालीसवें सूक्त का एकमात्र उद्देश्य इनकी युग्मता को सिद्ध करना एवं युग्म में रहने वाले पशु–पक्षियों से तुलना करना है किन्तु कतिपय सूक्त ऐसे भी प्राप्त होते हैं जो इनके अलग–अलग होने का संकेत करते हैं। जैसे–ऋग्वेद (1/181/4) में इन्हें यत्र–तत्र जन्म लेने वाले, एक को विजेता राजा तथा दूसरे को आकाश का पुत्र कहा गया है। यास्काचार्य के अनुसार एक रात्रि का पुत्र तथा दूसरा उषस् का पुत्र है।[1]

तैत्तिरीय संहिता के अनुसार वैदिक देवताओं में सर्वाधिक कम वयस्क देव हैं[2] किन्तु अन्यत्र इन्हें प्राचीन भी कहा गया है।[3] इनका स्वरूप उज्ज्वल है।[4] ये तेजस्विता के अधिपति, स्वर्णकान्ति वाले और मधुवर्ण के हैं।[5] ये सुन्दर युवा हैं और कमल के पुष्पों की माला धारण करते हैं।[6] विचारों की भाँति अथवा उत्क्रोश पक्षी की भाँति द्रुतगामी हैं।[7] ये बलिष्ठ, मेधावो एवं गुह्यशक्ति से युक्त हैं।[8] दस्र एवं नासत्य इनकी विशिष्ट उपाधिया हैं। ये एकमात्र युगल देव हैं जिनके लिए 'हिरण्यवर्तनि' (लाल पथवाला) विशेषण प्रयुक्त हुआ है।[9] अश्विनी कुमारों का मधु के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। इनके पास मधु से पूर्ण एक पात्र है जिसे पक्षी वहन करते हैं। अश्विनी कुमारा के रथ को 'मधुवर्ण' अथवा 'मधुवाहन' कहा गया है। 'मधूयु, 'माध्वी' अथवा 'मधुपा' विशेषण एकमात्र इन्हीं के लिए प्रयुक्त किये गये हैं। ये ही मधुमक्खियों को मधु प्रदान करते हैं।[10] मधुप्रेमी के साथ ही साथ ये अन्य देवताओं की भाँति सोमप्रेमी भी हैं।[11]

अश्विनी कुमारों का रथ सुवर्णमय है।[12] इसे ऋभुओं ने बनाया था।[13] इनके रथ में एक हजार रश्मियाँ हैं[14] और रथ की बनावट भी विचित्र है। यह त्रिस्तरीय है अर्थात् यह तीन खण्डों वाला, तीन पहियों वाला तथा इसका कुछ अन्य भाग भी त्रिस्तरीय है।[15] एकमात्र अश्विनी कुमारों का ही रथ तीन पहिए वाला है। ऐसा दृष्टान्त मिलता है कि जब ये सूर्या के विवाह में गये थे तभी इनके रथ का एक पहिया कहीं खो गया था।[16] इनके रथ को कभी अश्व तो कभी हंस, उत्क्रोश आदि पक्षियों द्वारा खींचा जाता था।[17] इनके रथ को कभी–कभी भैसों अथवा एक गधे द्वारा खींचा जाने वाला कहा गया है।[18] ऐतरेय ब्राह्मण (4/7–9) के अनुसार सोम–सूर्या के विवाह के समय गधों द्वारा खींचे जाने वाले रथ में बैठकर अश्विनी कुमारों ने एक दौड़ जीत लिया था। इनका रथ इतना द्रुतगामी है कि बैठने वाले को पतन का भय बना रहता है। इसलिए उनके पकड़ने के लिए रथ में तीन स्तम्भ लगे हुए हैं।[19] वह एक ही दिन में आकाश एवं पृथिवी की परिक्रमा कर लेता है।[20] इनके रथ का परिमाण पाँच देशों तक विस्तृत है।

अश्विनी कुमारों का निवासस्थान आकाश के सागर में, आकाश के जलप्लावन में हैं।[21] ये कभी वृक्षों पर, कभी गृहों में तो कभी पर्वत शिखरों पर रहते हैं।[22] इन्हें तीन स्थानों वाला कहा गया है।[23] अत एव इनका दिन में तीन बार आवाहन किया जाता है। उषा काल में ये अपने रथ को सन्नद्ध करके पृथिवी पर उतरते और स्तोताओं के समर्पणों को स्वीकार करते हैं।[24] आहुतियाँ ग्रहण करने के लिए केवल अपने निश्चित समय पर ही नहीं अपितु संध्या समय अथवा प्रातः, मध्याह्न और सूर्यास्त के समय भी आने के लिए भी आवाहन किया गया है।[25] अश्विनी कुमार देवता के रूप में दुष्टात्माओं का पीछा करके उन्हे भगा देते हैं।[26] ऐतरेय ब्राह्मण (2–15) में उषस् एवं अग्नि के साथ ही अश्विनी कुमारों को उषा काल का देवता कहा गया है। शतपथ ब्राह्मण (5/5/4/1) में अश्विनी कुमारों को अरुण–श्वेत वर्ण बताया गया है और इस कारण एक अरुण–श्वेत वर्ण बकरा ही इन्हें समर्पित किया गया है।

सूर्या के साथ अश्विनी कुमारों का घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसी सम्बन्ध के कारण ही ऋग्वेद में अश्विनों से अपने रथ पर बैठाकर वधू को वर गृह तक पहुँचा देने का आवाहन किया गया है।[27] वधू में गर्भ धारण करने की शक्ति उत्पन्न करने के लिए अन्य देवों के साथ अश्विनी कुमारों का स्तवन किया जाता है।[28] ये लोग नपुंसकों की पत्नियों को सन्तान प्रदान करते हैं और बन्धा गायों को दूध देने के लिए प्रेरित करते हैं।[29] अथर्ववेद (2/30/2) में इन्हें प्रेमियों को संयुक्त करने वाला कहा गया है।

सूर्य के विलीन हो गये प्रकाश को पुनः प्राप्त करने अथवा खोज निकालने वाले के रूप में ही मूलतः अश्विनी कुमारों की कल्पना की गयी होगी। ऋग्वेद में ये लोग विशेष प्रकार के सहायता करने वाले देव माने गये हैं। ये लोग अन्य देवों की अपेक्षा सर्वाधिक शीघ्रतापूर्वक सहायता करने वाले तथा सामान्य रूप से सभी विपत्तियों से मुक्त करने वाले देव माने गये हैं।[30] इस प्रकार की सहायता करने के कारण ही इनका नित्य स्तवन किया जाता है। विशेष रूप से ये समुद्र में जहाजों को डूबने से बचाते हैं। समुद्र से धन–सम्पत्ति लाने के लिए भी इनका आवाहन किया गया है।[31] विपत्तियों से लोगों की सहायता करने के साथ ही साथ ये लोग दिव्य चिकित्सक भी हैं जो अपने उपचारों द्वारा व्याधियों का उपशमन, दृष्टिदान, अन्धे, अपंग तथा रुग्ण व्यक्तियों को स्वास्थ्य प्रदान करते हैं।[32] ये लोग देवों के चिकित्सक और अमरत्व के अभिभावक हैं जो मृत्यु को स्तोताओं से भगाते हैं।[33] ये अपने स्तोताओं को वृद्धावस्था तक दृष्टिहीन नहीं होने देते और उन्हें प्रचुर धन–सम्पत्ति तथा सन्तानों से परिपूर्ण रखते हैं।[34] ऋग्वेदसंहिता में अश्विनी कुमारों के लोक कल्याणात्मक कार्यों की निर्विवाद एवं लम्बी सूची प्राप्त होती है। जैसे–

1. च्यवन ऋषि के वृद्ध हो जाने पर उनके पुत्र, कलत्रादि ने छोड़ दिया था। अश्विनी कुमारों ने उनकी जरा दूर करक पुनः यौवन प्रदान किया और उनका विवाह एक कन्या से करा दिया।[35]
2. एक बार असुरों ने किसी पीड़ागृह में सपरिवार अत्रि मुनि को बन्द कर उसमें तुषाग्नि जला दी। अश्विनी कुमारों ने उस अग्नि को बुझाकर अत्रि को बाहर निकाला और पीडा से क्षीण अत्रि मुनि को खाने के लिए पौष्टिक द्रव्य प्रदान किये।[36]
3. एक बार गौतम ऋषि मरुप्रदेश में फँस गये और प्यास से तड़पने लगे। अश्विनी कुमारों ने उनके पास कूप को लाकर कूप का मूल ऊपर और मुख नीचे कर उन्हें स्नान–पान की व्यवस्था से सुखी किया।[37]
4. नन्दन नामक ऋषि को असुरों ने कूप में डाल दिया था, तब अश्विनी कुमारों ने उन्हें बाहर निकाला।[38]
5. जैसे कोई शिल्पी जीर्ण रथ को नया कर देता है उसी प्रकार अश्विनी कुमारों ने जराजीर्ण वन्दन ऋषि को युवा कर दिया और माँ के गर्भ में कष्ट भोगते वामदेव को गर्भ से बाहर निकाला।[39]
6. एक बार असुरों ने अत्रि मुनि को जलते हुए धर्म (उबलते हुए घृत एवं दुग्ध) में गिरा दिया था। अश्विनी कुमारों ने मधुयुक्त धर्म को जल के समान शीतल कर दिया।[40]
7. अश्विनी कुमारा ने स्तुति करने वाले कृष्ण के पुत्र विश्वक को खोया हुआ विष्णाप्व नामक पुत्र वापस मिला दिया था।[41]
8. श्याव नामक ऋषि को मार कर किसी ने उनके शरीर के तीन टुकड़े कर दिये थे। अश्विनी कुमारों ने कटे भागों को जोड़कर उन्हें पुनर्जीवित कर दिया।[42]
9. कक्षीवान् की पुत्री घोषा ब्रह्मवादिनी थी किन्तु कुष्ठ रोग से पीडित होने के कारण अविवाहित ही पिता के घर पड़ी रही। अश्विनी कुमारों ने प्रौढावस्था में उसका रोग दूर किया जिससे उसे अभीष्ट वर के प्राप्ति हो सकी।[43]
10. अश्विनी कुमारों ने एक बार अरण्य में वृक द्वारा पकड़ी हुई बटेर को उसके मुख से कराया था।[44]
11. ऋज्राश्व ने अपने पिता की सौ भेड़ों को वृक के भक्षण हेतु छोड़ने का अपराध किया था। दण्डस्वरूप उसके पिता ने उसे दृष्टिविहीन कर दिया। अश्विनी कुमारों ने उस ऋज्राश्व को कभी खराब न होने वाली आँखें प्रदान कर उसे दृष्टिहीन दोष से मुक्त किया।[45]

12. एक युद्ध में खेल राजा से सम्बन्धित विश्पला नाम्नी स्त्रो का पैर युद्ध में कट गया था। इस स्थिति में अश्विनी कुमारों ने रात्रि में ही लोहे की जाँघ लगाकर युद्ध के लिए तैयार किया।[46]
13. जाहुष राजा के चारों से शत्रुसेना द्वारा घिर जाने पर शत्रु के घेरे को तोडने में समर्थ अश्विनी कुमारों ने रात्रिकाल में उस राजा को घेरे से उठाया और रथ पर बैठकर पर्वतों को लाँघकर अत्यन्त सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया था।[47]

ज्योतिषशास्त्र में अश्विनी तारों का एक समूह है जो शुभ और अशुभ कर्मों का द्रष्टा है। शूद्र जाति के रासभ इनके रथ को खींचते हैं। हठयोग के अनुसार दायें और बायें नासापुटों को अश्विनी कहते हैं। इनका ही दूसरा नाम इडा और पिगला है। शीघ्र गमन करने के कारण वायु को अश्विन् कहते हैं। रासभों से वहन होने का यौगिक अर्थ यह है कि जब तीव्र हवा चलती है तो आकाश में शब्द भर जाता है।[48]

कुल मिलाकर अश्विनी कुमार मधुर, परदुःखकारक, सुहृद् एवं वैदिक चिकित्सक हैं और इनकी सामाजिक प्रतिष्ठा कहीं इन्द्र से बढ़कर है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. निरुक्त–12/2
2. तैत्तिरीय संहिता–7/2/7/2
3. ऋग्वेदसंहिता–7/62/5
4. ऋग्वेद संहिता–7/68/1
5. ऋग्वेद संहिता–8/22/14, 8/8/2, 8/26/9
6. ऋग्वेदसंहिता–6/62/5, 10/184/2, अथर्ववेदसंहिता–3/22/4
7. ऋग्वेदसंहिता–8/22/19, 5/78/48
8. ऋग्वेदसंहिता–6/62/5, 8/8/2, 6/63/5, 10/93/7
9. ऋग्वेद संहिता–1/93/18
10. ऋग्वेदसंहिता–1/112/21,
11. ऋग्वेदसंहिता–10/106/10
12. ऋग्वेदसंहिता–4/44/4,5
13. ऋग्वेदसंहिता–10/39/12
14. ऋग्वेदसंहिता–1/119/1
15. ऋग्वेदसंहिता–1/118/1,2
16. ऋग्वेदसंहिता–10/85/15
17. ऋग्वेदसंहिता–1/117/2, 4/45/4, 1/118/1
18. ऋग्वेदसंहिता–5/73/7, 1/34/9
19. ऋग्वेदसंहिता–1/34/9
20. ऋग्वेदसंहिता–3/58/8
21. ऋग्वेदसंहिता–8/26/17
22. ऋग्वेदसंहिता–7/70/3
23. ऋग्वेदसंहिता–8/8/23
24. ऋग्वेदसंहिता–1/22/2
25. ऋग्वेदसंहिता–8/22/14, 5/76/3
26. ऋग्वेदसंहिता–7/73/4, 8/35/19
27. ऋग्वेदसंहिता–10/85/29
28. ऋग्वेदसंहिता–10/184/2
29. ऋग्वेदसंहिता–1/112/3
30. ऋग्वेदसंहिता–1/112/2, 1/118/3
31. ऋग्वेदसंहिता–1/47/9
32. ऋग्वेदसंहिता–8/18/8, 8/22/10, 1/116/19, 10/39/3
33. अथर्ववेदसंहिता–7/53/1, तैत्तिरोय ब्राह्मण–3/1/2/11
34. ऋग्वेदसंहिता–1/116/25, 8/8/13
35. ऋग्वेदसंहिता–1/116/10
36. ऋग्वेदसंहिता–1/116/8
37. ऋग्वेदसंहिता–1/116/9
38. ऋग्वेदसंहिता–1/116/11
39. ऋग्वेदसंहिता–1/119/7
40. ऋग्वेदसंहिता–1/180/4
41. ऋग्वेदसंहिता–1/116/23
42. ऋग्वेदसंहिता–1/117/24
43. ऋग्वेदसंहिता–1/117/7
44. ऋग्वेदसंहिता–1/116/14
45. ऋग्वेदसंहिता–1/116/16
46. ऋग्वेदसंहिता–1/116/15
47. ऋग्वेदसंहिता–1/116/20
48. ऋक्सूक्त संग्रह (डॉ0 हरिदत्त शास्त्री) पृष्ठ– 23